PRATHAM BOOKS
A Book in Every Child's Hand

पठन स्तर ३

# काली बस नाचना चाहता है

**Author:** Aparna Karthikeyan
**Illustrator:** Somesh Kumar
**Translator:** Swagata Sen Pillai

कोवलम के छोटे से मछुवारा गाँव में काली वीरपतिरन मशहूर है।
इसलिए नहीं कि वह कोई नायक है।
इसलिए भी नहीं कि उसने बड़े बड़े बदमाशों को हराया है।
वह मशहूर इसलिए है कि उसने नाचना सीखा।

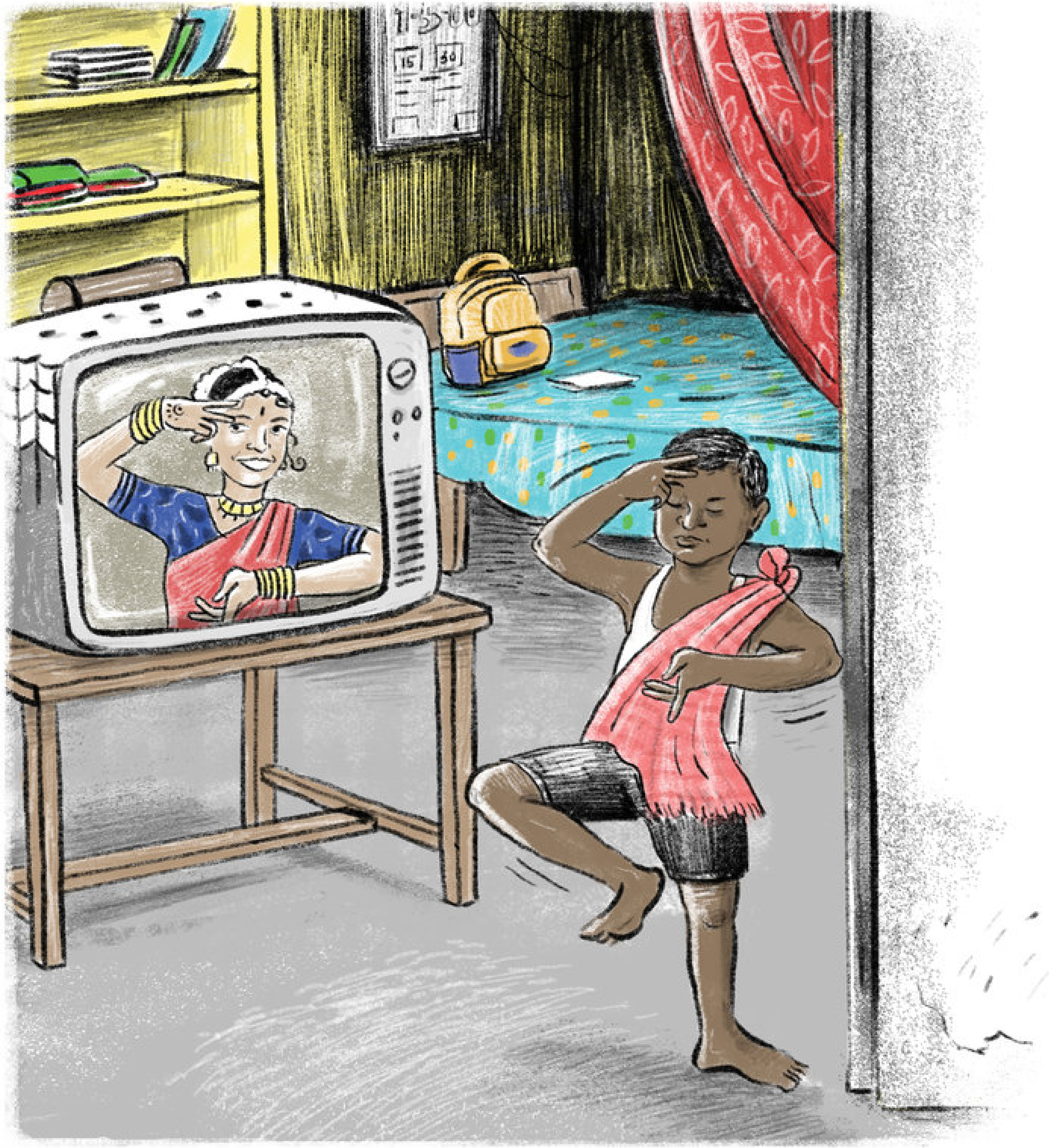

वर्ष है २००४ और काली आठ साल का है। बहुत से और लड़कों की तरह, वह भी स्कूल जाता है, दोस्तों के साथ खेलता है और टीवी देखता है। मगर और लड़कों से हटके, काली नाचता भी है।

काली को टीवी पर पद्मिनी का नृत्य देखना बहुत पसंद है। वे एक प्रसिद्द नृत्यांगना और अभिनेत्री हैं। काली उन्हीं की तरह घुंघरू बांध कर भरतनाट्यम नाचने की कोशिश करता है।

*तरी धन झ्नु धिमि*
*तक धरि किट तक तधींगिणतोम,*
*तधींगिणतोम, तधींगिणतोम।*

ऐसे नक़ल करके नाचते नाचते काली इतना अच्छा नाचने लगता है कि उसके अध्यापक उससे विद्यालय के कार्यक्रमों में नृत्य करने को कहते हैं। कुछ ही समय में, उस छोटे से मछुवारा गाँव में काली भरतनाट्यम नर्तक के नाम से प्रसिद्ध हो जाता है।

एक दिन, साराह चंदा, जो कि चेन्नई के एक अस्पताल की संचालिका हैं, उसे मंच पर नृत्य करते हुए देखती हैं।
*धित तेयुम तत ता तेइ धित तेयुम तत ता तेइ*

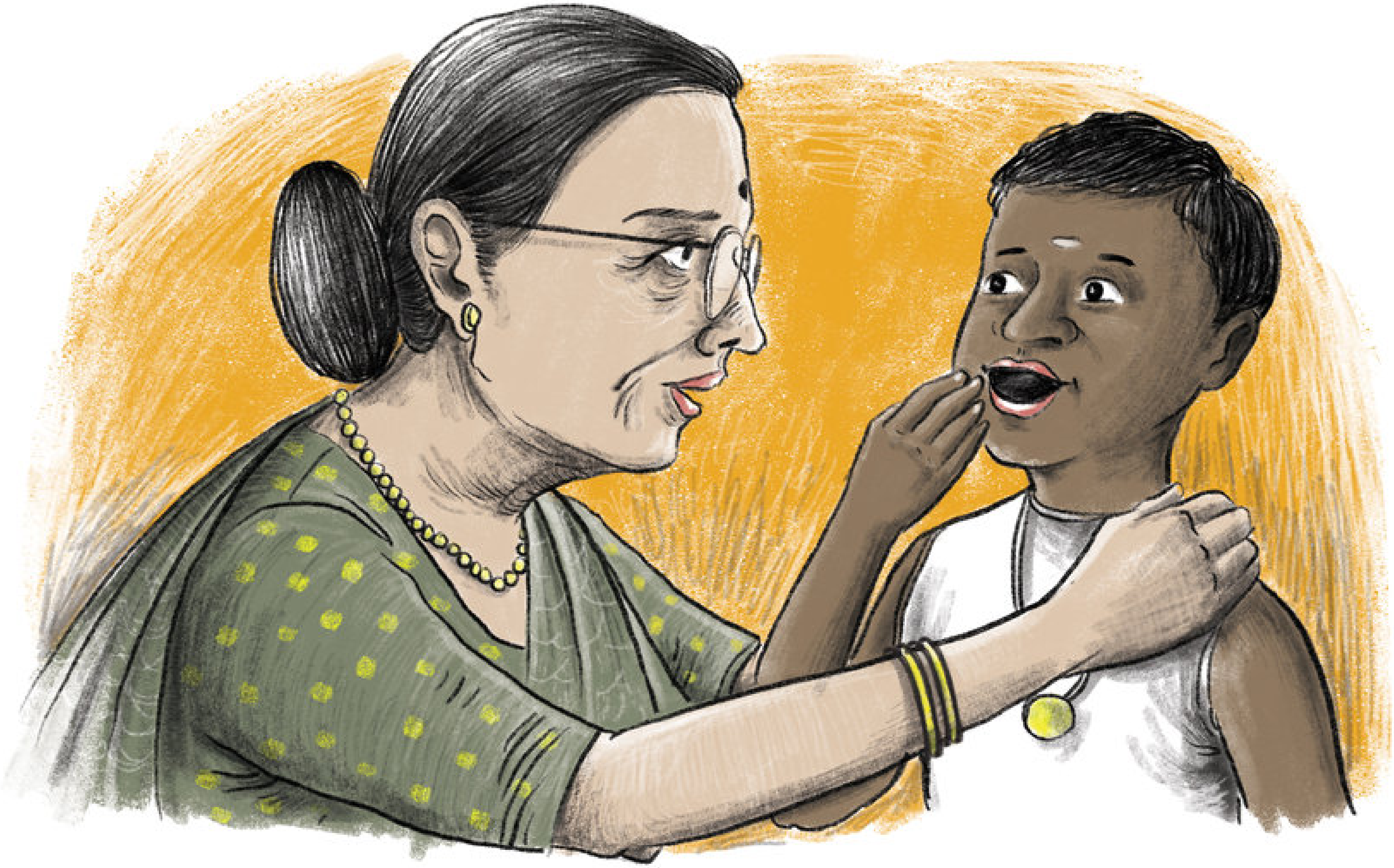

उसकी प्रतिभा को देखकर साराह अवाक हो जाती हैं। वे यह जानकर बहुत प्रभावित होती हैं कि काली ने इतना सब खुद ही सीखा है। “क्या तुम कलाक्षेत्र में भरतनाट्यम सीखना चाहोगे?” कार्यक्रम के बाद वे उससे पूछती हैं। काली पहले तो हंस पड़ता है। भरतनाट्यम? दलित समुदाय से किसी को भरतनाट्यम सीखने का अवसर बहुत कम ही प्राप्त हुआ होगा और उसमें पारंगत होने की बात तो बहुत दूर की है। काली के परिवार में नृत्य की कक्षा के लिए पैसे कभी जुट ही नहीं पाएंगे। और फिर, लड़कों का नृत्य को पेशा बनाते हुए किसने सुना है! मगर साराह मज़ाक नहीं कर रही थीं। “तुम्हें भरतनाट्यम की बाकायदा शिक्षा लेनी चाहिए काली,” वे कहती हैं। “तुम्हारी फीस मैं भर दूँगी।”

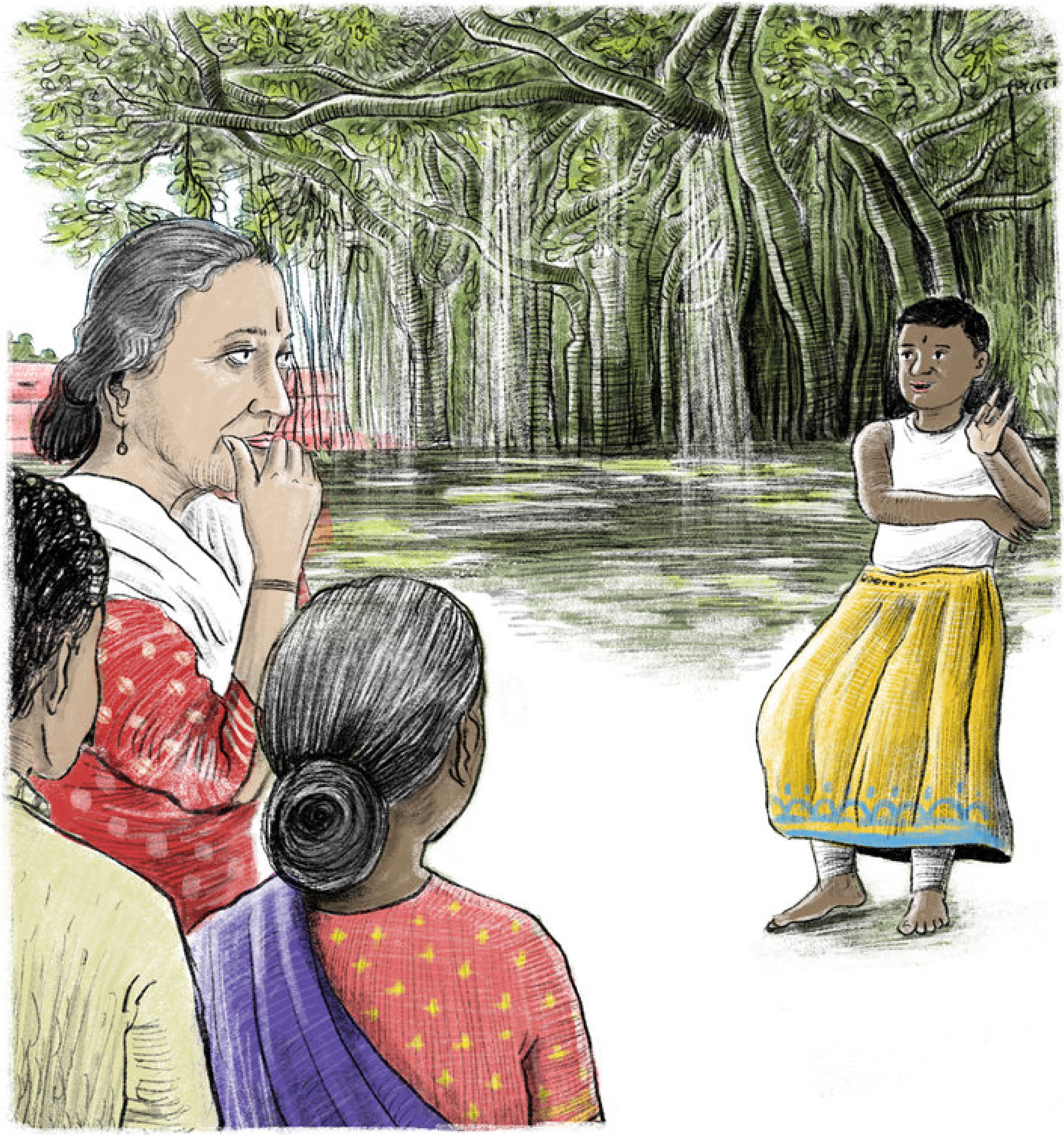

साराह उसे कलाक्षेत्र दिखाने ले जाती हैं। कलाक्षेत्र देश भर का सबसे अच्छा नृत्य और कला प्रशिक्षण का केंद्र माना जाता है और चेन्नई स्थित बहुत सारे पेड़ों से घिरी हुई एक सुन्दर जगह है।

कलाक्षेत्र संस्थान की प्रमुख, लीला सेमसन, जो स्वयं भी भारतनाट्यम की जानी मानी नृत्यांगना हैं, काली से नृत्य करने को कहती हैं।

काली अपनी पैंट के ऊपर से ही धोती बांध कर एक फ़िल्मी गीत पर नाचता है। शिक्षक को उसे देखकर लगता है कि उसमें नर्तक बनने के गुण हैं।

मगर काली तो यह तय भी नहीं कर पाया है कि वह बड़ा होकर क्या बनना चाहता है। क्या उसे अभिनेता, कलेक्टर, शिक्षक, वैज्ञानिक या नर्तक बनना चाहिए? उसके दोस्त और परिवार से भी उसे जवाब खोजने में मदद नहीं मिल पाती है।

“आजतक कभी किसी ने नाचकर कोई पैसे कमाए हैं? यह तो समय बर्बाद करने वाली बात है,” गुरगुराते हुए मामाजी कहते हैं।

“अरे लड़कियाँ नाचा करती हैं, तुम भी लड़की बन जाओगे!” दोस्त उसे चिढ़ाते हैं।

अम्मा काली से पूछती हैं उसका दिल क्या कहता है। “तुम्हें नृत्य पसंद है? क्या नाचने से तुम्हें ख़ुशी मिलती है? क्या तुम सारी उम्र यही करना चाहोगे?”

“हाँ। नृत्य मेरे लिए इस सब से भी बढ़कर है अम्मा,” काली कहता है।

“फिर तो तुम किसी की मत सुनो। अगर इसी से तुम्हें ख़ुशी मिलती है, तो नृत्य ही सीखो।” हमेशा की तरह अम्मा के पास उसके हर सवाल का जवाब था।

तो स्कूल की अंतिम परीक्षा के बाद, काली दक्षिणचित्र नामक एक संस्था में तीन तरह के लोक नृत्य सीखने लगता है।

**ओलियाट्टम**

*दिमता नकडि नक*
*धिन धिन*
*दिमता नकडि नक*
*धिन धिन*

**थापाट्टम**

*तकुकुकु तकुकुकु*
*त तकुकुकु था त*
*तकुकुकु तकुकुकु*
*त तकुकुकु था त*

**करगाट्टम**

*दत्त दगुन दगुन*
*दत्त दगुन दगुन*

उसके अगले महीने से, काली कलाक्षेत्र में भरतनाट्यम सीखने लगता है। वहाँ शुरुआत के कुछ दिन उसे बहुत ही घुपचुप और डरावने से लगते हैं।

जब सीखने का बोझ बढ़ जाता है और उसकी टांगों में दर्द होने लगता है, काली माँ के पास जाकर रोता है।
“तुम्हें भैंस चराने हैं क्या?” अम्मा गंभीर होकर पूछती हैं।
“नहीं!” “तो फिर जाओ और अपनी जी-जान लगाओ।”

काली अपनी इस नई दुनिया में रमने लगता है। कुछ दोस्त बनाता है। जब भाषा की दिक्कत आती है – कुछ दोस्त तमिल नहीं बोलते हैं तब काली मुद्राओं में बात करता है।
“तुमने खा लिया?”
“छुट्टिओं में घर गए थे क्या?”

कलाक्षेत्र में वह एक कुशल नर्तक बन जाता है। वह छरहरा, गठीला और ऊर्जा से भरपूर हो जाता है। अब वह घंटों नाच सकता है। वह नृत्य के साथ साथ कर्णाटक संगीत भी सीखता है।

देशभर और विदेश से आए हुए छात्रों में उसके कई सारे दोस्त बन जाते हैं। सभी अपने अपने सपने, अपनी आकांक्षाएं और घरों से लाई हुई खाने की चीज़ें भी काली के साथ बांटते हैं!

काली को देश के कई स्थानों और विदश से भी, नृत्य के लिए आमंत्रण आते हैं। वह बस, रेलगाड़ी और हवाई जहाज़ से कई जगह जाता है। उसकी दीदीयाँ उसे छेड़ती हैं, “याद है, बिना जी मिचलाए तुम्हारी बस यात्रायें पूरी नहीं हो पाती थीं!” काली भी हँसता है उनके साथ। यह सच था। बचपन में बस के सफर में वह हमेशा एक नींबू और एक प्लास्टिक की थैली अपने साथ रखता था।

वक़्त के साथ साथ काली नृत्य में कई पुरस्कार और सम्मान जीतता है। और फिर कोवलम में वह कूतम्बलम नाम से एक नृत्य विद्यालय आरम्भ करता है।

अब काली एक और कार्यक्रम के लिए तैयार है।
वह ध्यान से अपनी रूप सज्जा करता है।
सहजता से नृत्य की पोशाक पहनता है।
शनील का सुन्दर सा पर्दा उठता है।
और काली नाचने लगता है।

## काली एक नर्तक

'द पीपल्स आर्काइव ऑफ़ रूरल इण्डिया' के अनुसार, २५ वर्षीय काली वीरपतिरन शायद एकमात्र पुरुष नर्तक है जिसने शास्त्रीय नृत्य शैली भरतनाट्यम के साथ साथ तमिलनाडु की तीन अन्य प्राचीन नृत्य शैलियों में दक्षता पाई है।

तमिलनाडु में चेन्नै से कुछ दूर स्थित कोवलम नाम के मछुआरों के एक गाँव में पैदा काली ने बचपन में ही अपने पिताजी को खो दिया था। उसकी माँ, एल्लमल्लि वीरपतिरन जो निर्माण कार्य में कार्यरत एक मज़दूर हैं, उन्होंने बहुत मेहनत और अथक प्रयास से काली और उसके भाई बहनों की परवरिश की।

चेन्नई की ग्रेमालटेस अस्पताल की प्रबंधन समिति की सदस्या साराह चंदा ने देश की प्रमुख नृत्य प्रशिक्षण संस्था कलाक्षेत्र में काली के प्रशिक्षण का खर्चा उठाया।

काली ने दक्षिणचित्र में भी श्री कन्नन कुमार से नृत्यशिक्षा प्राप्त की।

नृत्य में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पूरा करके, काली ने कोवलम में कूतम्बलम नाम से एक नृत्य विद्यालय स्थापित किया है।

‘पीपल्स आर्काइव ऑफ़ रूरल इण्डिया’ ने काली पर एक वृत्त चित्र बनाया है तथा कई पत्र-पत्रिकाओं और टेलीविजन चैनलों पर काली के साक्षात्कार आए हैं।

नृत्य के लिए काली कई सम्मान प्राप्त कर चुके हैं। इनमें म्यूज़िक एकेडमी मद्रास का ‘स्पिरिट ऑफ़ यूथ’ पुरस्कार शामिल है।

## द पीपल्स आर्काइव ऑफ़ रूरल इण्डिया (PARI)

द पीपल्स आर्काइव ऑफ़ रूरल इण्डिया दुनिया के सबसे जटिल ग्रामीण जीवन का एक जीवंत दस्तावेज़ और संग्रहकोष है। इसके संस्थापक संपादक पी. साईनाथ और उनकी टीम तथा उनके विशाल स्वयंसेवी समूह की आकांक्षा है कि वे भारत में रह रहे ८३.३ करोड़ ग्रामीणों की जीवनयात्रा को कोष में सुरक्षित करेंगे जो कि ७०० से अधिक भाषाएँ बोलते हैं।

PARI भविष्य में प्रयोग की जाने वाली पाठ्यपुस्तकें भी तैयार करने में जुटी है।
ये सब कुछ अनगिनत कथाओं, चित्रों, वीडियो और श्रव्य सामग्री पर आधारित है
जिन्हें इस साईट पर देखा जा सकता है www.ruralindiaonline.org

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

## Story Attribution:

This story: काली बस नाचना चाहता हैis translated by Swagata Sen Pillai . The © for this translation lies with Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: 'Kali Wants to Dance', by Aparna Karthikeyan . © Pratham Books , 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

## Other Credits:

'Kali Bas Nachna Chahta Hai' has been published on StoryWeaver by Pratham Books. Guest Editor: Sudeshna Shome Ghosh. www.prathambooks.org

## Images Attributions:

Cover page: A man dancing at the beach, by Somesh Kumar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: A man standing at the beach, by Somesh Kumar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: A boy dancing , by Somesh Kumar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 4: A boy dancing on stage, by Somesh Kumar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: A teacher talking to a boy, by Somesh Kumar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: A teachers watching a boy dance, by Somesh Kumar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: An upset boy sitting on a wall, by Somesh Kumar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 8: A boy lying on his mother's lap, by Somesh Kumar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: Three men dancing, by Somesh Kumar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: A boy talking to his mother, imagining a buffalo, by Somesh Kumar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

PRATHAM BOOKS storyweaver

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following link.

Images Attributions:

Page 11: A boy talking to his friends, by Somesh Kumar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: A boy dancing in a class, by Somesh Kumar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 13: A boy throwing up in a bus, by Somesh Kumar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: A boy putting on make up and dancing, by Somesh Kumar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: A boy striking a Bharatanatyam pose, by Somesh Kumar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: A boy sitting with his guru, by Somesh Kumar © Pratham Books, 2018. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions

Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

# काली बस नाचना चाहता है

(Hindi)

काली को सिर्फ़ और सिर्फ़ नाचना ही अच्छा लगता था। पर ऐसा भला कैसे हो सकता था? उसके गाँव में लड़के नाचा नहीं करते थे, और वो भी भरतनाट्यम! सपने देखने, उनमें विश्वास करने और उन्हें हक़ीक़त में बदलने की एक छोटी सी कहानी।

This is a Level 3 book for children who are ready to read on their own.

PRATHAM BOOKS
storyweaver

Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!

This book is shared online by Free Kids Books at https://www.freekidsbooks.org
in terms of the creative commons license provided by the publisher or author.

Want to find more books like this?

https://www.freekidsbooks.org
Simply great free books -
Preschool, early grades, picture books, learning to read,
early chapter books, middle grade, young adult,
Pratham, Book Dash, Mustardseed, Open Equal Free, and many more!
Always Free – Always will be!

**Legal Note:**
This book is in CREATIVE COMMONS - Awesome!! That means you can share, reuse it, and in some cases republish it, but only in accordance with the terms of the applicable license (not all CCs are equal!), attribution must be provided, and any resulting work must be released in the same manner.
Please reach out and contact us if you want more information: https://www.freekidsbooks.org/about

*Image Attribution: Annika Brandow, from You! Yes You! CC-BY-SA.*
*This page is added for identification.*